International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 50-51

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2017; 3(1): 50-51
www.allresearchjournal.com
Received: 11-11-2016
Accepted: 12-12-2016

**डॉ0 रविन्द्र कुमार**
पीएच.डी., चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत।

**Correspondence**
**डॉ0 रविन्द्र कुमार**
पीएच.डी., चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत।

# ऋग्वेद में मानव जीवन से संबधित बिम्ब की विवेचना

**डॉ0 रविन्द्र कुमार**

ऋगवेद में बिम्ब की विवेचना के सन्दर्भ में हमें अनेक प्रकार के बिम्बों का दिग्दर्शन होता है। इसी सन्दर्भ में हम मानव जीवन से सम्बन्धित बिम्बों की विशाल संख्या ऋगवेद में देख सकते हैं। जिसका विवेचन अग्रलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

जैसे स्वामी भृत्यों को और उषा प्रातः काल की वेला में प्राणियों को पुरुषार्थ में नियुक्त अथवा प्रेरित करती है। उसी प्रकार माता-पिता को अपनी कन्याओं को विद्या अध्ययन में नियुक्त अथवा प्रेरित करना चाहिए। यहां माता-पिता के लिए जहां उषा एवं स्वामी का बिम्ब आया है, वहीं इस मन्त्र से कन्याओं के शिक्षा के अधिकार की पुष्टि होती है।[1]

बिजली, पृथ्वी और सूर्य प्रकाश की विद्या के लिए स्त्री का बिम्ब प्रयुक्त हुआ है। जैसे स्त्री अपनी इच्छा के अनुकूल पति को सुख देती है, वैसे ही बिजली, पृथ्वी और सूर्यप्रकाश की विद्या के ग्रहण से पदार्थों को प्राप्त होकर सदा सुख देती है।[2]

जिस प्रकार कृषक खेत उत्तम फसल के लिए उत्तम बनाता है, वैसे ही मुमुक्षु जन इन्द्रियों एवं मन को शान्त एंव वश में करके ब्रह्मवेत्ता जनों की सेवा करें। यहां मुमुक्षु के लिए कृषक का बिम्ब आया है।[3]

प्रस्तुत मन्त्र मानवीय जीवन से सम्बन्धित यह बिम्ब अतीव सुन्दर है। अग्नि को कई रुपों में रुपायित करने का जो प्रयत्न इस मन्त्र में हुआ है उसी सन्दर्भ में अनायास ही यहां बिम्बों की सर्जना हो गई है। यहाँ अग्नि के लिए पिता, भाई, पुत्र एवं मित्र का बिम्ब एक ही मन्त्र में प्राप्त होता है। अर्थात् यह अग्नि पिता के समान पूज्य भाई एवं पुत्र तथा मित्र के समान स्नेही है।[4]-

मानव-जीवन से सम्बन्धित बिम्ब अतिथि[8] के रुप में अग्नि को चित्रित किया गया है। जैसे अथिति पूज्य होता है वैसे ही अग्नि भी पूज्य है।[5]-

शरीर के लिए यज्ञशाला का बिम्ब बड़ा ही सुन्दर है। यहां शरीर को एक यज्ञशाला कहा गया है। जैसे यज्ञशाला में नौ द्वार होते हैं, ऐसे ही दो नाक, दो आंख दो कान, मुख, उपस्थ और जननेन्द्रिय ये नौ द्वार हैं[6]।-

काल विभाग (क्षण, मिनट, घण्टा आदि) एवं मनुष्य जीवन के लिए बहुत ही सुन्दर बिम्ब यहां अनायास ही उत्कीर्ण हो गया है। दिन एवं रात्री ये दोनों मिलकर काल विभाग रुपी धागों के द्वारा मानव-जीवन रुपी वस्त्र को बुन रही हैं। यहां काल विभाग एवं मनुष्य जीवन के लिए क्रमशः धागों एवं वस्त्र का बिम्ब प्रस्तुत किया गया है[7]।-

मानव-जीवन से सम्बन्धित यह मन्त्र बड़ा ही सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत करता है। यहाँ मनुष्य के लिए पेड़ की शाखाओं का बिम्ब प्रस्तुत किया है। जैसे शाखाएँ प्रतिदिन आगे बढ़ती हैं, उसी प्रकार मानव आगे बढ़ता है[8]।-

अग्नि के लिए ही नेता का बिम्ब प्राप्त होता है। जिस प्रकार नेता आगे बढ़ता या चलता है, उसी प्रकार यह अग्नि भी अग्रणी है[9]।-

दूत[9] का बिम्ब अग्नि के लिए प्रस्तुत मन्त्र में प्राप्त होता है। जिस प्रकार दूत मनुष्य का हित करता है, उसी प्रकार यह अग्नि भी मनुष्य का हित करता है[10]।-

अग्नि के लिए स्वामी का बिम्ब प्राप्त होता है। अर्थात् अग्नि की स्तुति उसी तरह करता हूं जैसे सेवक स्वामी की सेवा करता है[11]।-

इन्द्र ने जब वृत्र पर वज्र फेंककर मारा, तब वृत्र भी मेघों का वस्त्र ओढ़कर इस इन्द्र की तरफ चढ़ दौड़ा। यहां मेघ के लिए वस्त्र का बिम्ब दिया गया है[12]।–

परिव्राजक के लिए यहाँ मल्लाह का बिम्ब तथा वेदवाणी (उत्तम वाणी) के लिए नाव का बिम्ब आया है। जैसे मल्लाह नाव को आगे चलने के लिए प्रेरित करता है, उसी प्रकार परिव्राजक उत्तम वाणी को फैलाता है।– इसके साथ ही परिव्राजक के उपदेश के लिए यह बिम्ब बड़ा सुन्दर है[13]।–

अग्नि को ऋग्वेद में सन्देशवाहक कह कर सम्बोधित किया गया है। यहां अग्नि के लिए सन्देशवाहक का बिम्ब आया है। जैसे सन्देशवाहक का कार्य सन्देश पहुंचाना है, उसी तरह यह अग्नि देवों तक स्तुतियों को पहुंचाता है[14]।–

अग्नि के लिए अतिथि का बिम्ब प्राप्त होता है। अर्थात् जैसे अतिथि पूज्य होता है, वैसे ही यह अग्नि भी पूजनीय है। यहां अतिथि का बिम्ब अग्नि के अतिथिरूप को प्रकट कर देता है[15]।–

अग्नि का वर्णन करने के सन्दर्भ में अग्नि अरणियों (समिधाओं) में उसी तरह छिपा हुआ रहता है, जिस तरह गर्भिणी स्त्रियों में गर्भ रहता है। यहां यह जो बिम्ब योजना प्राप्त हो रही है, यह बहुत रोचक एवं मानव-जीवन से सम्बन्धित है। यहां अरणियों एवं अग्नि के लिए क्रमशः गर्भिणी एवं गर्भ का बिम्ब प्राप्त हो रहा है[16]।–

ऋग्वेद में पत्नी की महत्ता का वर्णन करते हुए उसके लिए घर का बिम्ब आया है। कहा गया है कि पत्नी ही घर है। यहां एक ओर बिम्ब की सृष्टि जितनी सुन्दर है, उतना ही सुन्दर यह विचार भी है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि स्त्रियों का सम्मान, आदर एवं उनके अधिकार सब सुरक्षित थे। यह विषय समसामयिक है, जिस समानता एवं नारी अधिकारों के लिए वर्तमान में आन्दोलन एवं जागरुकता जागरण किया जा रहा है, वह उस काल में वर्तमान था[17]। शरीर के लिए रथ[10] का बिम्ब एवं इन्द्रियों के लिए घोड़े एवं बैल का बिम्ब आया है। अर्थात् शरीर एक रथ है जिसमे इन्द्रियां घोड़े हैं[18]।

अग्नि उस परमात्मा के लिए ऋग्वेद में उल्लिखित है। यहां अग्नि के लिए अश्वपालक का बिम्ब दिया गया है। अर्थात् जैसे एक अश्वपालक उत्तम एवं खराब घोड़ों को अलग अलग कर देता है, वैसे ही अग्नि मनुष्य के पाप-पुण्यों को पृथक कर देता है। यहां अग्नि के लिए अश्वपालक तथा पाप एवं पुण्यों के लिए उत्तम एवं खराब घोड़ों का बिम्ब दिया गया है। इस श्रेष्ठ बिम्ब के द्वारा श्रेष्ठ शिक्षा का भी सन्देश प्राप्त हो रहा है[19]।–

## संदर्भ


1. सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः। सह द्युनेन बृहता विभावरी राया देवी दास्वती।। ऋ 1।48।1
2. अर्थमिद्वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम्।
   तुञ्जाते वृष्ण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वित्त में अस्य रोदसी।। ऋ 2।105।1
3. मुमुक्ष्वौ3मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊजुवः।
   असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः। ऋ 4।14011
4. त्वामग्ने पितरभिष्टिभिर्नर स्त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम्।
   त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत् त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः।। ऋ. ।9।1।2
5. स इधान उषसोराम्या अनुस्वर्ण दीदेदरुषेण भानुना।
   होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे।। ऋ. ।8।2।2
6. विश्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः।
   व्यचस्वतीर्विं प्रथन्तामजुर्यावर्ण पुनाना यशसं सुवीरम्।। ऋ. ।5।3।2
7. साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते।
   तन्तुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती।। ऋ. ।6।3।2
8. सांक हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि।
   विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते।। ऋ. ।4।5।2
9. ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः।
   कुवित् तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इंद यवुः।। ऋ. ।5।5।2
10. अन्तर्ह्यगने ईयसे विद्वान् जन्मोभया कवे।
    दूतो जन्येव मित्र्यः।। ऋ. ।7।6।2
11. ज्ञेया भागं सहानो वरेण त्वादूतासो मनुवद् वदेम।
    अनूनमग्निं जुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोहवीमि।। ऋ. ।6।10।2
12. ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षेऽधा वृत्राय प्रवधं जभार।
    मिहं वसान उप हीमदुद्रोत तिम्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः।। ऋ. ।3।30।2
13. कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्।
    सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा का चिदभिभा विश्व्या विदत्।। ऋ. ।1।42।2
14. अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते होता निषतो मनुषः पुरोहितः।
    क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर्देवेभिरग्निरिषितो धियावसुः।। ऋ. ।2।3।3
15. विश्पतिं यह मतिथिः नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम्।
    अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे।। ऋ. ।8।3।3
16. अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु।
    दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर मनुष्येभिरग्निः।। ऋ. ।2।29।3
17. जायेदस्तं मघवन् त्सेदु योनि स्तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु।
    यदा कदा च सुनवामा सोम मग्निष्ख्वा दूतो धन्वात्यच्छ।। ऋ. ।4।53।3
18. स्थिरौ गावौ भवतां वीडुरक्षो मेषा विवर्हि मा युगं वि शारि।
    इन्द्रः पातल्ये ददतां शरीतो ररिष्टने मे अभि नः सचस्व।। ऋ. ।17।53।3
19. चित्तिमचित्तिं चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्।
    राये च नः स्वपृत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य।। ऋ. ।1।1।2।14